# कहावताँ में छुप्यो मौसम रो ज्ञान

**मौसम के पूर्वानुमान में आज भी खरा है पारम्परिक ज्ञान।**

cecoedecon

# प्राक्कथन

बढ़ती हुई आपदायें विश्व स्तर पर गम्भीर चिन्तन का विषय बनी हुई हैं। दुनिया में अधिकतर लोगों का मानना है कि मौसम में हो रहे बदलावों के लिए औद्योगिक प्रदूषण, ग्रीन हाउस गैसें और ग्लोबल वार्मिंग जिम्मेदार हैं लेकिन पृथ्वी पर बड़े–बड़े मौसम परिवर्तन हर दस–बीस वर्ष में होते रहते हैं परन्तु वर्तमान में चिन्ता का विषय बिगड़ता पारिस्थितिकी संतुलन है। ऐसा मानना है कि मौसम और जलवायु में बड़ा परिवर्तन कभी भी देखने को मिल सकता है; जिसके लिए हम सभी को भविष्य में नयी–नयी आपदाओं व इनकी पुनरावृत्ति से होने वाले नुकसान को कम करने हेतु समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन के द्वारा आमजन को इससे निपटने के लिए जागरूक व सक्षम बनाना होगा।

विगत कुछ वर्षों से राजस्थान में प्राकृतिक व मानव निर्मित आपदाओं में बढ़ोतरी देखी जा रही है। मुख्य रूप से प्रदेशवासियों को सूखे व अकाल का सामना औसतन दो या तीन साल में करना ही पड़ता है। सूखा व अकाल के लिए राज्य सरकार ने कई कार्यक्रम व योजनायें लागू कीं परन्तु इससे समुदाय की सरकार पर निर्भरता बढ़ी है और समुदाय द्वारा आपदा प्रबन्धन के अपने ही परम्परागत ज्ञान व तरीकों का प्रयोग कम से कम होने लगा जिससे इस अमूल्य ज्ञान को बचाए रखने की चुनौती उत्पन्न हो गई है। ऐसे में सिकोईडिकोन, जो कि एक स्वयंसेवी संस्था है, ने विगत 26 वर्षों के अनुभव के आधार पर समुदाय के परम्परागत ज्ञान पर आधारित आपदा प्रबन्धन को तरजीह देते हुए राज्य के चार जिलों (जयपुर, टोंक, बारां व बाड़मेर) के कुल छः ब्लॉकों में आपदा पूर्व तैयारी पायलट परियोजना को क्रियान्वित किया। इसके अन्तर्गत समुदायों के पारम्परिक आपदा प्रबन्धन के ज्ञान व तरीकों, विशेष तौर पर आपदा से पूर्व चेतावनी तंत्रों व कहावतों को लिपिबद्ध किया गया। आपदा के पूर्वानुमानों से संबंधित कहावतों का संकलन गॉवों के बुजुर्गों के साथ चौपाल–बैठकों, व्यक्तिगत संपर्कों के द्वारा इकट्ठा कर किया गया है।

यह पुस्तिका स्थानीय समुदायों के सदियों पुराने अनुभवों के आधार पर आपदा पूर्वानुमान के तरीकों का पुनः प्रचलन कर समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन को मजबूती प्रदान करेगी। इससे न सिर्फ दूर–दराज के क्षेत्रों में होने वाले नुकसान व घटनाओं के प्रभावों को कम किया जा सकेगा साथ ही साथ सरकार पर निर्भरता भी कम होगी। यह पुस्तिका स्थानीय आपदाओं से निपटने के लिए जागरूकता फैलाने एवं आपदा पूर्व तैयारी हेतु निर्णायक भूमिका अदा करेगी। यह पारम्परिक ज्ञान सरकार की विभिन्न नीतियों एवं क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाकर समुदाय की भागीदारी एवं नेतृत्व सुनिश्चित करवाने में भी सहायक सिद्ध होगा।

शरद जोशी
सचिव

# आभार

राजस्थान राज्य के जयपुर, टोंक, बारां व बाड़मेर जिलों में आपदा पूर्व तैयारी नामक पायलट परियोजना के अन्तर्गत स्थानीय समुदाय के आपदा पूर्व तैयारी संबंधी परम्परागत पूर्वानुमान ज्ञान को सुरक्षित रखने हेतु स्थानीय कहावतों व लोकोक्तियों का संकलन किया गया है। इस संकलन का उद्देश्य लोक कहावतों के माध्यम से सूखा, अकाल तथा अन्य आपदाओं के पूर्वानुमान की जानकारी अन्य लोगों तक उपलब्ध कराना है जिससे कि स्थानीय समुदाय इस ज्ञान व तरीकों को अपनाएं और आपदा से होने वाले भारी नुकसान से बच सकें। परम्परागत लोक ज्ञान के इस संकलन को तैयार करने में स्थानीय बुजुर्ग, प्रबुद्ध किसानों एवं अन्य लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

यह पुस्तिका विभिन्न समूहों के सम्मिलित प्रयासों का परिणाम है परियोजना क्रियान्वयन हेतु सभी टीम सदस्यों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने परियोजना के सफलतापूर्वक संचालन एवं क्रियान्वयन में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। स्थानीय समुदाय एवं अधिकारी वर्ग का भी आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने विभिन्न क्षेत्रीय भ्रमणों व बैठकों के दौरान अपना अमूल्य समय व परम्परागत मौसमीय पूर्वानुमान की जानकारी प्रदान कर परियोजना लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सहयोग प्रदान किया है।

परियोजना प्रस्ताव तैयार करने एवं क्रियान्वयन में उचित मार्गदर्शन हेतु उपनिदेशक डॉ. अल्का अवस्थी का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही इस पुस्तिका के सम्पादन व प्रकाशन कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु उन सभी का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया है। मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तिका सूचनाप्रद, शिक्षाप्रद और प्रेरणाप्रद होगी तथा पूर्वानुमान के द्वारा समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन में सार्थक सिद्ध होगी।

डॉ. मनोज कुमार तिवारी

# प्रस्तावना

अपनी लम्बी–चौड़ी सीमाओं, विशाल जनसंख्या तथा विशेष मौसमीय परिवर्तनों से भारत के अधिकतर प्रदेशों/ राज्यों को प्राकृतिक/ मनुष्य निर्मित आपदाओं का सामना करना ही पड़ता है जो मुख्यतः समुदाय की सामाजिक–आर्थिक तथा पर्यावरणीय व्यवस्था को तहस–नहस करते हुए सम्पत्ति और जीवन को हानि पहुँचाती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ऑक्सफेम के अनुसार पिछले 20 वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं में करीब चार गुना बढ़ोतरी हुई है। यह बढ़ोतरी बहुत अधिक है पर ऐसा भी नहीं है कि इससे पहले इतिहास में बहुत ज्यादा ठंड या गर्मी न पड़ी हो।

ज्यादातर अध्ययनों से यह पता चला है कि मौसम में हो रहे बदलावों के लिए औद्योगिक प्रदूषण, ग्रीन हाउस गैसें और ग्लोबल वार्मिंग जिम्मेदार हैं। लेकिन पृथ्वी पर बड़े मौसम परिवर्तन हर दस–बीस साल में होते रहते हैं। परन्तु वर्तमान में चिन्ता का विषय बिगड़ता पारिस्थितिकी संतुलन है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से हो रहा है। लगभग हर दो या तीन वर्ष बाद सूखा या बाढ़, गर्मी या सर्दी ऋतु में तापमान में बहुत ज्यादा उतार–चढ़ाव देखने में आ रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि मौसम और जलवायु में बड़ा परिवर्तन कभी भी देखने को मिल सकता है, जिसके लिए हम सभी को आने वाली आपदाओं से निपटने के लिए जागरूक एवं सक्षम बनना होगा।

भारत के कुल क्षेत्र का 55 प्रतिशत भूकम्प सम्बन्धी घटनाओं से, 16 प्रतिशत सूखे से, 8 प्रतिशत समुद्री तूफान से तथा 5 प्रतिशत बाढ़ से प्रभावित रहता है। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है और देश का सर्वाधिक सूखाग्रस्त क्षेत्र इसी राज्य में है। मानसून की विफलताएं एवं अकाल की बारम्बार पुनरावृत्ति स्थिति को ज्यादा गम्भीर बना देती है और इसके दुष्प्रभाव विभिन्न प्रकार से दिखाई देते हैं। कृषि एवं पशुपालन गतिविधियों पर इसका विपरीत प्रभाव होता है और पशु–पक्षी एवं मानव के लिए पानी एवं भोजन की कमी आदि होती है। मानसून का दूसरा खतरनाक पहलू राज्य के कुछ हिस्सों (बाड़मेर, भरतपुर, झालावाड़ इत्यादि) में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ के रूप में सामने आता है।

पर्यावरण असंतुलित होने से आपदाओं का बढ़ना, पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है जिससे लोगों की आजीविका, रोजगार, खाद्य सुरक्षा व शिक्षा जैसी मूलभूत जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पाती जिसकी वजह से उन्हें पलायन करना पड़ता है। इससे नित नई–नई बीमारियां व अन्य खतरे बढ़ रहे हैं जो कि समस्या की गम्भीरता को बढ़ाते हैं। स्थानीय समुदाय प्रकृति के समीप होने

की वजह से प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं जिनका वर्तमान में क्षरण व अतिदोहन चरम सीमा पर पहुँच चुका है जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ने से लोगों की आजीविका व खाद्य सुरक्षा का खतरा बढ़ा है।

विगत कुछ वर्षों से राजस्थान में प्राकृतिक व मानव निर्मित आपदाओं में बढ़ोतरी देखी जा रही है। राज्य ने विगत 50 वर्षों में अनेक आपदाओं का सामना किया है। राज्य के अधिकतर क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने सूखा व अकाल को देखा है जिसकी गम्भीरता का आधार कम वर्षा होना, वर्षा अवधि घटना, अनाज व चारे की किल्लत, पानी, पशुधन व फसलों का नष्ट होना इत्यादि है। जिस वर्ष सूखा नहीं पड़ता है उस वर्ष लोग कृषि तथा पशुधन से संबंधित गतिविधियों से वर्ष भर रोजगार के अवसर पाते हैं परन्तु जब गम्भीर सूखा व अकाल पड़ता है तो लोगों की निर्भरता सरकार के द्वारा चलाये गये सूखा राहत कार्यों व नरेगा जैसी योजनाओं पर हो जाती है। समुदाय के प्रभावित लोग राज्य सरकार के द्वारा चलाये गये कार्य पर्याप्त न होने की स्थिति में क्षेत्र से बाहर रोजगार की तलाश में पशुधन सहित पलायन कर जाते हैं तथा बड़ी तादाद में पशु–पक्षी व जंगली जीव मर जाते हैं।

धीमी गति की आपदाओं में अकाल एवं सूखा है, जिनका प्रभाव काफी लम्बे समय तक रहता है। परन्तु भूकम्प, बाढ़, अग्निकाण्ड, दुर्घटना, ओलावृष्टि आदि आकस्मिक आपदाओं से बहुत कम समय में बड़ी तादाद में जनहानि व सम्पत्ति आदि का नुकसान उठाना पड़ता है। इन सभी आपदाओं से प्रभावी रूप से निपटने के लिए वहॉं के समुदाय वासियों, विभिन्न प्रकार की स्वयंसेवी संस्थाओं व संगठनों तथा सरकार द्वारा तुरन्त कार्यवाही की आवश्यकता पड़ती है। इन सभी आपदाओं के प्रभावों को कम करने एवं स्थायी रोकथाम के लिए वर्तमान में समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन के लिए हर स्तर को ध्यान में रखकर उसकी पूर्व तैयारी योजना अति आवश्यक है।

हमारे पूर्वजों द्वारा सदियों से संजोये पारम्परिक ज्ञान व तरीके प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी/ चेतावनी देने में सक्षम थे। हम सभी प्रकृति पर निर्भर करते हैं जिसमें हमको भविष्य में होने वाले मौसम परिवर्तन/ खतरों/ आपदाओं का पूर्वानुमान और उसकी जानकारी मिल जाती है। यह पूर्वानुमान व भविष्यवाणी प्रकृति में हो रही हलचल व बदलाव का अहसास, बादलों की गतिविधियॉं, हवा की दिशा व गति, पशुओं व जीवों की गतिविधियॉं/ व्यवहार तथा पौधों इत्यादि के जीवनकाल व विशेष अवस्था में परिवर्तन को समझकर इसका अनुमान लगाया जाता रहा है।

प्रकृति में बदलाव व घटित होने वाली आपदाओं की जानकारी सरकार द्वारा भी पूर्व चेतावनी के रूप में अनेक मीडिया माध्यमों से जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता रहा है। इस प्रकार की आपदाओं की चेतावनी व भविष्यवाणी दूर–दराज के क्षेत्रों में सभी लोगों तक बहुत बाद में पहुँच पाती है तथा समुदाय को भारी हानि उठानी पड़ती है। शोध व अनुभवों के आधार पर वैज्ञानिकों व सरकार ने स्वीकार किया है कि क्षेत्र विशेष के समुदाय अपने पारम्परिक तरीकों से आपदा से होने वाले नुकसान के प्रभाव को कम कर सकते हैं तथा गॉव व ब्लॉक स्तर पर आपदा प्रबन्धन योजना के माध्यम से लोगों को भागीदार बनाकर जागरूकता, क्षमतावर्द्धन इत्यादि करके सरकार पर निर्भरता कम कर सकते हैं और साथ ही स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग करके आपदा से निपटने के लिए स्थानीय तरीकों तथा सहभागिता से आपदा प्रबन्धन विषय को विकास की विभिन्न योजनाओं के साथ समन्वित करके धन–जन की हानि को कम कर सकते हैं।

बेहतर आपदा प्रबन्धन के लिए इसकी पूर्व तैयारियों हेतु समुदाय का पारम्परिक ज्ञान, अनुभव व आपदा से सम्बंधित भविष्यवाणियों/ कहावतों का संकलन कर अन्य समुदाय के लोगों तक पहुँचाने से आपदा की रोकथाम, भावी प्रभाव एवं खतरों में कमी के प्रयास किये जा सकेंगे। दीर्घकालीन आपदा प्रबन्धन के लिए योजनाबद्ध विकास के माध्यम से सभी विभागों, पंचायती राज संस्थानों एवं सामुदायिक संगठनों को आपदाओं की रोकथाम एवं आपदाओं के भविष्य में प्रभाव एवं खतरों को कम करने के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को विकास प्रक्रिया में सम्मिलित करना होगा। विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में आपदा प्रबन्धन के लिए बहुआयामी कार्यक्रम चलाकर समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन पर अधिक जोर दिया जा रहा है। सरकार पर बढ़ती निर्भरता को कम करने एवं सक्रिय जनसहभागिता को सुनिश्चित करने के साथ जन, धन व सम्पत्ति के नुकसान को कम करने के लिए एवं दीर्घकालीन सतत विकास के मद्देनजर आपदा प्रबन्धन को वैधानिक स्वरूप देने की दृष्टि से भारत सरकार ने ''आपदा प्रबन्धन अधिनियम – 2005'' बनाया है, जिसके प्रावधानों को लागू करने की प्रक्रिया भारत सरकार द्वारा शुरू कर दी गयी है। इस अधिनियम के द्वारा विभिन्न प्राधिकरणों की स्थापना करते हुए, विभिन्न स्तर के अधिकारियों और संस्थाओं के अधिकार एवं दायित्वों को निर्धारित किया गया है।

राजस्थान आधारित स्वयंसेवी संस्था सिकोईडिकोन विगत 26 वर्षों से आपदा प्रबन्धन के क्षेत्र में समुदाय के लोगों के साथ मिलकर राहत, बचाव तथा पुनर्वास का कार्य करती आ रही है। अतः इतने लम्बे अनुभव की सीख के बाद संस्था ने अक्टूबर 2007 से दिसम्बर 2008 तक आपदा पूर्व तैयारी परियोजना (पायलेट प्रोजेक्ट) अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ईको नीदरलैण्ड्स के सहयोग से राज्य के चार जिलों की छः तहसीलों (चाकसू, फागी, मालपुरा, निवाई, शाहबाद एवं शिव) में सभी समुदाय के

लोगों, संस्थाओं, विभागों, संगठनों इत्यादि के साथ क्रियान्वित की है। यह परियोजना चुनिंदा कार्यक्षेत्रों–बारां, बाड़मेर, टोंक व जयपुर जिलेय जो कि भौगोलिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े व परिस्थितियों में बिल्कुल भिन्न हैं, मे जारी है। बारां जिला राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित है वहीं पर बाड़मेर पश्चिमी राजस्थान का रेगिस्तानी इलाका है जबकि टोंक व जयपुर उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। बारां व बाड़मेर जिले अनुसूचित जाति व जनजाति बहुल क्षेत्र हैं जबकि जयपुर व टोंक इन क्षेत्रों से भिन्न हैं। परियोजना क्षेत्र की भौगोलिक विषमता, दूर–दराज बसे गॉव व ढ़ाणियों, सामाजिक बुराइयां व जेन्डर जैसे भेदभाव वाले क्षेत्र में यह परियोजना चलायी गयी। इस परियोजना का लक्ष्य स्थानीय समुदाय एवं अधिकारी (स्थानीय निकाय) वर्ग में जागरूकता लाना तथा आपदा पूर्व तैयारी एवं प्रतिक्रिया क्षमता विकसित करना है जिससे उनमें प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने की क्षमता विकसित हो सके।

इस परियोजना के अन्तर्गत समुदाय द्वारा पहचानी व अंकित की गयी समस्याओं, आपदाओं तथा जोखिमों को इंगित किया गया है एवं आपदा प्रबन्धन को आपदा राहत की मानसिकता से आपदा पूर्व तैयारी में बदलने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार के बदलाव के लिए समुदाय आधारित संगठनों, व्यक्तियों, संस्थाओं (सरकारी व गैर सरकारी) एवं स्थानीय सरकार (पंचायत) को संवेदनशील बनाकर रणनीति में शामिल करवाया गया।

राजस्थान में सूखा/ अकाल, जो कि एक धीमी गति की निरन्तर चलने वाली आपदा है इसे प्राथमिकता के आधार पर चिन्हित किया गया है तथा अन्य आपदाओं की घटनायें अनियमित व असामयिक मानी गयी हैं। अतः राज्य की जनता ने सूखा/ अकाल प्रबन्धन को अपने जीवन में हर स्तर पर आत्मसात करते हुए अनुकूलन हेतु पूर्व चेतावनी तंत्र, विधियॉ व सामाजिक सहयोग के रूप में इन्हें अपनाया है। इन सबसे निपटने हेतु अनुकूलन रणनीति/ तंत्र जिसमें कि पानी, चारा, अनाज़, बीज़ इत्यादि का प्रबन्धन अपने स्तर पर या फिर समुदाय के स्तर पर किया है और इस तरह से पारम्परिक ज्ञान व विधियों को संजोये रखा है। परन्तु युवा पीढ़ी इस प्रकार की आपदा से निपटने के लिए अनुकूलन हेतु विधाओं तथा ज्ञान को भूलती जा रही है, जिसके अनेक कारण हो सकते हैं। सिकोईडिकोन ने समय की मांग को समझते हुए समुदाय के आपदा पूर्व चेतावनी तरीकों व पद्धतियों को लिपिबद्ध करने का एक अनूठा प्रयास/ पहल की है। इन सभी कहावतों तथा पद्धतियों में लोगों का पूर्ण विश्वास व भरोसा है इसीलिये आपदा प्रबन्धन के लिए इनका प्रयोग समुदाय स्तर पर आज भी हो रहा है। विभिन्न समुदायों द्वारा अपनाये जाने वाले पारम्परिक ज्ञान, कहावतों तथा लोकोक्तियों को आपदा प्रबन्धन हेतु पूर्व चेतावनी तरीकों व पद्धतियों के रूप में निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया गया है :–

# पूर्व चेतावनी पद्धतियों पर आधारित ज्ञान :

## पेड़–पौधों का प्रभाव

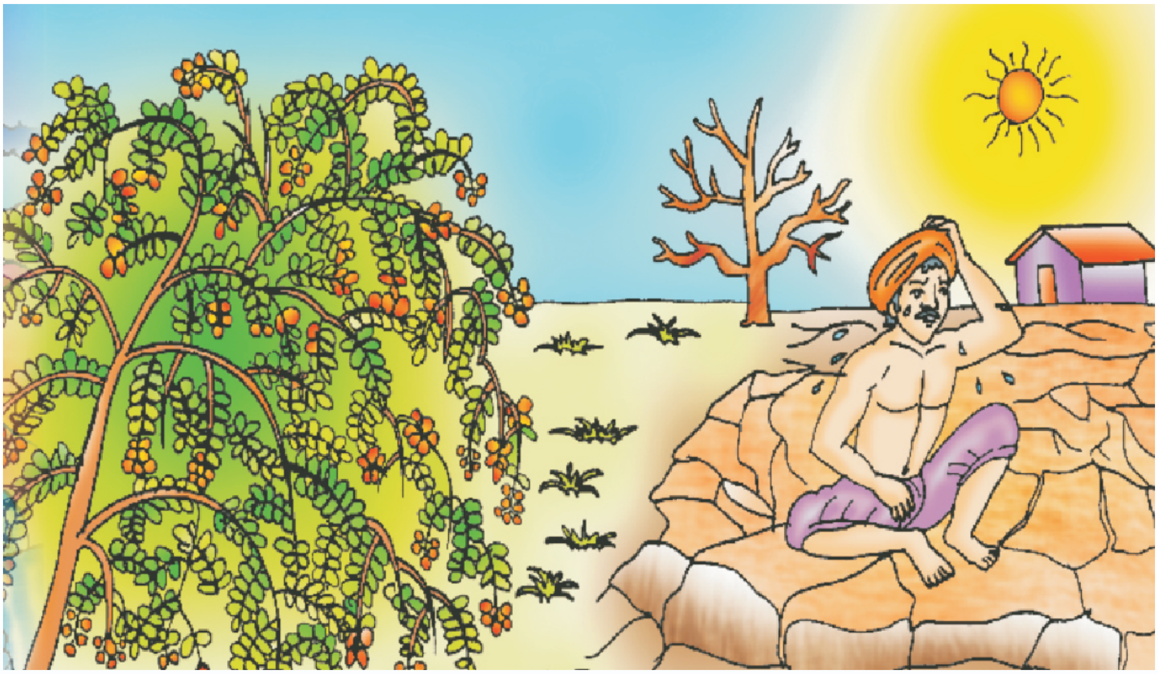

नीम के पेड़ की निम्बोलियाँ परिपक्व होकर नहीं गिरती हैं तब तक वर्षा होने की सम्भावना नहीं रहती, अगर कच्ची निम्बोली टूटकर गिर जायें तो जमाना (समाज में समृद्धि व खुशहाली) अधूरा रहता है।

नीम्बी सूकै नीम पर, पड़ै न नीचे आय।
अन्न न निपजै एक कण, काल पड़ैलो आय।।

इसका अर्थ है, यदि निम्बोली नीम पर पककर ही सूख जाय और भूमि पर न गिरे तो अन्न का उत्पादन बिल्कुल नहीं होगा अर्थात अकाल पड़ेगा।

नीम के पेड़ में फल (निम्बोली) अधिक लगती हैं तो वर्षा अच्छी होती है और चिड़िया यदि मिट्टी में नहाने लगे या किसी 'दाद' में तेज खुज़ली चलने लगे तो वर्षा जल्द ही शुरू होने की सम्भावना रहती है।

हरजीराम गुर्जर, मूर्तपुरा

जब तक बेर के पेड़ की फुटाण (कोपलें) नहीं निकलती हैं तब तक वर्षा नहीं होती है।

झड़बेरी में जिस वर्ष ज्यादा बेर फल लगते हैं उस वर्ष ज्वार व बाजरा की पैदावार अच्छी होती है।

सहरिया व भील जनजाति, शाहबाद

झड़बेरी (झाड़ी) के फल ज्यादा लगने पर अकाल की संभावना मानते हैं
अर्थात् शुभ सगुन नहीं माना जाता है।

रक्षाबंधन के त्यौहार पर मिट्टी के चार प्यालों में अलग–अलग धान्य बो देते हैं। लगभग 15 दिन बाद देखने पर जो धान्य अच्छा उगता है यह माना जाता है कि उस वर्ष वही धान्य सबसे अच्छी पैदावार देता है।

फिर उसी धान्य को सबसे ज्यादा बोया जाता है।

किराड़ जाति, शाहबाद

गोखरू के पौधों का अधिक फैलाव होता है तो चने की फसल अच्छी होती है।

आषाढ़ माह में सवेरे बिजणी पर (फसल बोने के लिए) जायें और दिन उगते ही पौ फटने (सवेरे जल्दी का समय) के वक्त गर्जना हुई तो माना जाता है कि वर्षा या तो उसी दिन या तीसरे दिन अवश्य आयेगी।

ऑकड़ा (आक) के फाल (फूल), खेजड़ी के फाल (फूल) व बेर के अच्छा लगने पर पैदावार अच्छी होती है अर्थात् वर्षा अच्छी होगी।

चार चने के बीजों को चार बर्तनों में आषाढ़ माह के प्रथम सप्ताह में डाल दिया जाता है। इन चनों को महीने के हिसाब से रखते हैं। इनमें जो चना नहीं भीगता है उस माह वर्षा कम होगी।

नारायणी देवी बैरवा, माताजी की ढाणी, चाकसू

जिस वर्ष कैंर के पेड़ ज्यादा फूलें फलें तो अकाल पड़ेगा।

देखाराम जाट, कोटड़ा

खेजड़ी वृक्ष में जाला पड़ना व जिस डाल की तरफ सांगरी ज्यादा हो उस तरफ (दिशा) की वर्षा होगी।

पोकर राम आदर्श बस्ती

खेजड़ी के पेड़ को सुबह के समय देखने पर उसकी कौंपल बढ़ती है तो मान लेते हैं कि वर्षा होगी। अगर दिन में कौंपल का आगे का मुँह जलने / मुर्झाने लगे तो वर्षा अच्छी होगी।

खेजड़ी की कोपलें अगर मुर्झाने लगती हैं तो बारिश के आसार 3–4 दिन में आने के बनते हैं।

जब पानी (मूंज़) के पूले पर फूल आ जायें तो किसान यह मानते हैं कि जौ, गेहूँ की बुवाई का समय आ गया।

रूकमणी देवी बैरवा, झराण्या की ढाणी, बापूगांव

जब जौ व गेहूँ का अंकुरण होता है तो (सूली) अंकुरण यदि हरे रंग का हो तो बुवाई का समय उचित नहीं है। यदि सूली अंकुरण पीले रंग का हो तो गेहूँ बुवाई का सही समय माना जाता है।

रूकमणी देवी बैरवा, झराण्या की ढाणी, बापूगांव

# हवा की गति व दिशा का प्रभाव

जब जेठ चले पुरवाई, तब सावण में धूल उड़ाई।

रामाकिशन चौधरी, महाचंदपुरा

ज्येष्ठ माह में पूर्वी हवा चले तो श्रावण माह सूखा रहेगा।

जोर चले पुरवाई, बादर काट लगाई। जब पूर्व दिशा की ओर की हवा बड़ी तेजी से बह रही हो तो समझ लो बादल झूम–झूम कर बरसेंगे।

ज्येष्ठ के महीने में हवा तीन दिन तक पूर्व दक्षिण कोण से पश्चिमी उत्तरी कोण की ओर बहती/ चलती है तो वर्षा होने की अधिक सम्भावना होती है।

जब हवा पश्चिमी उत्तरी कोण से तीन दिन तक चलती है तो पाला गिरने की अधिक सम्भावना बनती है।

गोविन्द नारायण चौधरी, कोथून

यदि ज्येष्ठ के माह में पश्चिमी उत्तरी कोण से 4–5 बार काली–पीली ऑंधी चलती है तो जमाना बढ़िया होता है।

होलिका दहन के समय पूर्वानुमान लगाया जाता है कि यदि आग की लपटें सीधी जाती हैं तो उस वर्ष वर्षा होने की पूरी–पूरी सम्भावना रहती है। होली का डांडा (लकड़ी का डण्डा) अंत में जिस तरफ गिरता है तो माना जाता है कि उस दिशा में वर्षा कम होगी।

शाहबाद की सभी जातियों में प्रचलित

नाड़ा टांकण, बैल बकावन, मत चालरी आधा श्रावण।

लक्ष्मीनारायण–करणपुरा,
श्री महावीरजी–खेड़ा

यदि आधे श्रावण के महीने में दक्षिण पूर्व की

ओर से हवायें चलती हैं तो सारे पशुधन को बेच दें क्योंकि वर्षा नहीं होगी और अकाल की संभावना बनेगी।

ऑंधी अथवा लू की शुरूआत उत्तर दिशा से होती है तो अच्छा सगुन मानते हैं, सारी फसलें अच्छी होती हैं।

चौमासा का चार महीना सावन, सूर्य, भादूड़ा, पुरवाई।
आसोज़ा में नाड़ा टांकण मेवा की सरनाई।।
हनुमान मीणा, डाबिच

पश्चिम से दक्षिण के बीच से हवा चलती है तो उसको नाड़ा टांकण बोलते हैं एवं चौमासे के चारों महीनों में हवा चलती है तो अच्छा जमाना माना जाता है। (पश्चिम से उत्तर के बीच हवा चलती है तो उसको सूर्या बोलते हैं और हवा पूर्व दिशा में चलती है तो पुरवाई बोलते हैं।)

पैलो पवन पूरब सूं आवै, बरसै मेघ अन्न बरसावै।
आषाढ़ माह के प्रारम्भ में ही यदि प्रथम वायु पुरवाई हो तो वर्षा और अन्न दोनों अच्छे होते हैं।

दिन तपे तावड़ा सांजे ठण्डो भाप (हवा)
डंक कहे रे भडली आ काल रा स्वभाव।
खेताराम चौधरी, विरधर सिंह की ढाणी
इसका अर्थ है सूर्य उदय होते ही यदि गर्मी तेज हो, किरणों का तेवर ज्यादा हो तथा सूर्य अस्त होने के समय (शाम) को ठंडी हवाएं चलें व ऐसा 5 से 7 दिन तक होता रहे तो अकाल पड़ेगा।

गर्मियों में यदि काली–पीली आंधी अधिक आती है तो यह खुशहाली का सूचक माना जाता है अर्थात् वर्षा अच्छी होती है।
मोली देवी, ऊंट का खेड़ा

सावण में सूर्यो भलो भादो नाड़ा टाकण, बैल नकावण मत चाले बरण आधे सावण
''पश्चिम एवं दक्षिण दिशा के बीच की हवा आधे सावण चलती है तो वर्षा नहीं आने का अनुमान है। होली के सगुन के आधार पर एकम (पड़वा) के दोपहर के 1 बजे के बाद से चतुर्थी तक बादल रहने से साढ़े तीन माह वर्षा अच्छी होने के आसार हैं।

मिगसर वाव न बजियो, रोहिण तपी न जेठ।
कंता न बॉंधो झोंपड़ी, रैहस्यू बड़ला हेठ।।
पूराराम भील, आदर्श बस्ती, शिव
इसका अर्थ है कि रोहिणी नक्षत्र में ऑंधी चलना और मृगशिरा में गर्म हवा की तपन अच्छी नहीं मानी जाती है। इसी प्रकार ज्येष्ठ माह में रोहिणी का न तपना और मृगशिरा में हवा का न चलना अकाल का सूचक है।

जेठ मास जै तपै निरासा।
तो जाणो बरखा री आसा।।
इसका अर्थ है यदि रोहिणी में गर्म हवा तपे और मृगशिरा में ऑंधी आवे तो आर्द्रा नक्षत्र में अवश्य वर्षा होगी।

दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की ओर हवा चले तथा भेड़ें उत्तर दिशा की ओर चलें तो तीन दिन के अन्दर वर्षा होगी।
वीसा खॉं, रामपुरा

सावण में तो सूरयो चालै, भादरवै परवाई।
आसोजां में नाड़ां टांकण, भरभर गाड़ा लाई।।
जगन्नाथ शर्मा खेड़ा
अर्थात् श्रावण महीने में उत्तर पश्चिम दिशा के मध्य हवा चले, भादवा महीने में पूर्व की हवा चले, आसोज़ (आश्विन माह) के महीने में पश्चिम व दक्षिण के बीच हवा चले तो अच्छी वर्षा होने के आसार होते हैं।

## पशु-पक्षियों के व्यवहार का प्रभाव

कौआ जब घौंसला बनाता है और उसके लिए तिनके लेकर चुनता है, यदि उस समय तिनके को बीच/ मध्य में पकड़ता है तो फसलें अच्छी होती हैं। अगर तिनका एक तरफ से पकड़ते हैं तो अकाल पड़ता है।

रामनिवास बैरवा, करेड़ा, निवाई

ज्येष्ठ के महीने में टिटहरी अगर तालाब के मध्य अण्डे देती है तो वर्षा तब तक नहीं होती जब तक बच्चे बाहर नहीं निकलते।

देवालाल बैरवा, बाढ़पथराज, निवाई

कार्तिक माह में लोमड़ी रात्रि के समय व प्रातःकाल बोलती है तो श्रावण माह में वर्षा होगी।

वर्षा आने की सम्भावना गाय व भेड़ को मालूम हो जाती है। वर्षा आने की सम्भावना की स्थिति में सभी भेड़ें इकट्ठी होकर झुण्ड में हो जाती हैं और चारा भी नहीं चरतीं। एक–दूसरे को अलग करने पर भी अलग नहीं हो पातीं किन्तु वर्षा हो जाने पर सब अलग–अलग हो जाती हैं।

यदि गाय स्वयं का मूत्र करके सूँघ लेती है तो तीन दिन में वर्षा आती है। यह वर्षा का शुभ संकेत है।

टिटहरी के अण्डों द्वारा पूर्वानुमान

- यदि टिटहरी के चारों अण्डे एक जगह गुच्छे में रखे हुए हैं तो माना जाता है कि वर्ष के चार महीने (क्रमशः चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ व आषाढ़) में कृषि व वर्षा अच्छी होगी।

किराड़ जाति, शाहबाद

- अण्डों के नीचे घोंसले के रूप में यदि घास–फूस के तिनके रखे हुए हैं तो माना जाता है कि उस वर्ष में महामारी आने की पूरी सम्भावना रहती है।

  सहरिया जनजाति, शाहबाद

- अण्डों के नीचे घोंसले के रूप में यदि सूखे गोबर के कण्डे रखे हुए हैं तो माना जाता है कि उस वर्ष पशु अथवा जानवरों में महामारी आने की पूरी सम्भावना रहती है।

  सहरिया जनजाति, शाहबाद

- अण्डों के नीचे घोंसले के रूप में कंकड़–पत्थर रखे हुए हैं तो माना जाता है कि उस वर्ष खाद्यान्न खूब पैदा होने की सम्भावना रहती है।

  भील जनजाति, शाहबाद

- टिटहरी अगर तालाब के बीच अण्डे देती है तो अकाल मानते हैं और यदि ऊंचे टीबे पर अण्डे देती है तो अच्छी वर्षा होने का संकेत माना जाता है।

  कल्याणमल किसान, बापूगांव

- टिटहरी के अण्डे की दिशा अगर दक्षिण है तो अकाल मानते हैं और चार अण्डे चारों दिशा में होते हैं तो अच्छा सगुन माना जाता है।
- टिटहरी घोंसले के अन्दर कंकड़, जौ, गेहूँ की डूँडली या देशी खाद पर अण्डे दे तो वर्षा अवश्य होगी।

  सीताराम बैरवा, सूरजरामपुरा

लोमड़ी कुम्हार मास से (आश्विन माह) शाम के समय यदि चार माह (आश्विन, भाद्रपद, बैसाख व चैत्र) तक लगातार बोलती है तो माना जाता है कि वर्ष के चारों माह कृषि व वर्षा अच्छी होगी। दो माह बोलती है तो माना जाता है कि वर्ष के चारों माह में से दो माह ही कृषि व वर्षा अच्छी होगी। यदि बिल्कुल नहीं बोलती है तो भयंकर अकाल पड़ेगा।

सहरिया व भील जनजाति, शाहबाद

सारस पक्षी यदि तालाब या बांध में ऊँची जगह अण्डे देवे तो वर्षा अवश्य होगी।

सीताराम बैरवा, सूरजरामपुरा

भेड़ यदि वर्षा से पूर्व चारा खाना बन्द कर दे या खेलती–कूदती व ज्यादा भागती दिखती है तो वर्षा अवश्य होगी।

आनन्दीलाल बैरवा, सूरतपुरा

रातेे सारस बोलिया दर्राया पहले ढंग।
महामारी तो ऐसी पड़सी हो जासी सब तंग।।

रेखाराम जाट, रामाणी ढाणी, शिव (बाड़मेर)

अर्थात् रात्रि को जब सारस आवाज़ (दर्राता है) करता है तो ऐसी महामारी की आशंका का अनुमान लगाया जाता है जिससे सभी जन परेशान हो सकते हैं।

मगरॉ मोरीया बोलीया तीतर सुकुन विचार।
ओला पड़े मोखला, हो जावे नर नारी लाचार।।

यूसब खान, निम्बासर

यदि मगरे पर मोर पक्षी झुण्ड बनाकर कुरलाव करते हैं तो ऐसा जनविश्वास है कि ओले ज्यादा पड़ेंगे।

खर डावो तीतर जीवणों सामी छाती छोंक।
सोलह श्वांस रूक करके फिर आगे विचार।।

फकूदेवी, सुमाणियों की ढाणी

इसका अर्थ है खरगोश, डावो और तीतर जब एक साथ नजर आ जाएं तो थोड़ा समय रूककर ही आगे बढ़ना चाहिए।

अगर आषाढ़ माह में चील पक्षी खेत में बैठ जाता है तो अच्छी वर्षा का संकेत है।

रातयू तो बोल्यो काग्ला दिन में बोल्यो स्याल, औऊ पड्यो अनोखो काल।

मदन लाल शर्मा, अलियाबाद, निवाई

लोगों का मानना है कि रात में कौआ बोले और दिन में सियार बोले तो समझो कि अनोखा अकाल पड़ेगा।

कुम्भ करेवा कोचरी हडवन्त ने हिरणा
इतरा लेवे जीवणा तो प्रभाते निरणा।

खेताराम चौधरी, विरधर सिंह की ढाणी, श्री हुगाराम, रामपुरा

किसी भी शुभ कार्य हेतु घर से प्रस्थान करते समय यदि खाली घड़ा, नेवला, उल्लू, हनुमानजी का हमशक्ल या हिरण सामने आ जावे तो इन्हें बांये हाथ की तरफ लेकर चलना चाहिए। यदि ऐसी स्थिति होती है तो कोई अशुभ घटना घट सकती है।

जब हम होली दहन करने जाते हैं तब किसी बैल को पूज कर जाते हैं। जब होली दहन करके वापस आते हैं तो उस बैल को देखते हैं। यदि बैल बैठा हुआ मिलता है तो फसल पैदावार कमजोर होती है या अकाल पड़ता है और यदि बैल खड़ा हुआ मिलता है तो पैदावार अच्छी होती है अर्थात् वर्षा अच्छी होती है।

घासीराम बैरवा, दोसरा खुर्द

होली के दूसरे दिन चार बैलों को चार खूँटे पर अलग–अलग बॉध देते हैं। उन चारों बैलों को वर्षा के चार महीने मानते हैं। यानि एक बैल को एक महीना मानते हैं। इन चारों में से कोई बैल दो घण्टे के अन्दर बैठ जाये तो यह माना जाता है कि उस माह में वर्षा नहीं होगी।

पैपा देवी बैरवा, माताजी की ढाणी, चाकसू

चिड़िया नहावे धूल में मेंढक बोले अपार,
चींटी ले अण्डा चढ़ी तो बरखा होवे अपार।

चिड़िया मिट्टी में नहाती है, मेंढक बोलता है और चीटियॉं अपने अण्डों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं तो वर्षा होने के पूरे आसार होते हैं।

जब गॉव में बाहर से कोई अज्ञात व्यक्ति (चोर अथवा डकैत आदि) आते हैं तो टिटहरियॉं आवाज करने लगती हैं एवं कुत्ते भौंकने लगते हैं जिससे संकेत हो जाता है कि कोई अनजान व्यक्ति आया है।

कोयल एवं पाटा गोयली बोलने पर वर्षा होने का संकेत देती है।

नन्दलाल शर्मा, रतनपुरा एवं श्रीमती केशर देवी जाट, अजमेरी

बाड़मेर क्षेत्र के किसान वर्षा की ऋतु से पहले खेतों में जाते हैं तथा सोन चिड़िया का सगुन देखते हैं घर से जाते वक्त जीवणे हाथ (दाहिने हाथ) की तरफ चिड़िया शान्त भाव से बोले उसे मालाणी कहते हैं तथा खेत पहुँचने पर चिड़िया चोंच में चुग्गा लेकर दाहिने हाथ की तरफ बोले तो उसे संगाणी कहते हैं, ऐसा सगुन होने पर मानते हैं कि खेत में अनाज की पैदावार अच्छी होगी।

रात्रि के समय मोरों का कुरलाना, कुत्तों का भौंकना, महामारी की चेतावनी का संकेत है।

हुकराराम, कोटड़ा

मेंढक जल व बिल छोड़कर खुली जगह विचरण करें तो भूकम्प की सम्भावना रहती है।

कुम्भाराम, आदर्श बस्ती

काग, कुत्तो, कोचरो अर्धरात्रि बोले।
या तो महामारी पड़े या पड़े ओले।।

जीवाराम, हड़वा

अर्थात् कौवा, कुत्ता व कोचर (उल्लू) जब अर्द्धरात्रि में आवाज करते हैं तो महामारी या ओले पड़ने का संकेत समझा जाता है।

सियाले रो सांडो तिल बाढ्य री गो।
ऐसो मेघ बरसे सूता सूता जो।।

सागर नाथ, शिव

इसका अर्थ है कि सर्दी के मौसम में यदि सॉडा नाम के जन्तु खुले में विचरण करते मिलें और तिल की फसल की कटाई के समय गो नाम का जन्तु बिलों से बाहर आकर खुले में विचरण करे तो ज्यादा वर्षा होगी।

किसी भी आपदा के आने से पूर्व राष्ट्रीय पक्षी मोर संगठित होकर कड़वी वाणी/आवाज में बोलते हैं तथा वर्षा के लिये मीठी वाणी में बोलते हैं।

आषाढ़ माह में पाटा गोयल बोलती है तो वर्षा आने के सगुन व संकेत होते हैं अर्थात् वर्षा होती है।

वर्षा के महीनों में काली चिड़िया सुबह जितनी जल्दी बोलती हैं उतनी जल्दी ही वर्षा आने की सम्भावना होती है।

पपियो पिऊ पिऊ करै, मोरा धणी अजग्ग।
छत्र करै मोर्‌यौ सिरै, नदियां बहे अथग्ग।

यदि पपीहा पिऊ–पिऊ करने लगे और मोर बार–बार बोलने लगे तथा पंखों का छत्र बनाए तो वर्षा इतनी ज्यादा होगी कि नदियां बहने लगेंगी।

बग पंख फैलाय, उझकि चोंच पवना भखै।
तीतर गूंगा थाय, इंद्र धड़कै माघजी।।

यदि बगुले पंख फैलाकर बैठे हों तथा चोंच से वायु का भक्षण करते हों तथा तीतर बोलते नहीं हो तो वर्षा आई ही समझो।

चिड़ी जन्हावै धूल में, मेहा आवणहार।
जल में न्हावै चिड़कली, मेह विदातिण वार।।

नारायण राम, आदर्श बस्ती, शिव

जब चिड़िया धूल में नहाएं तो वर्षा आई समझो और यदि वे जल में नहाएं तो उस दिन से वर्षा गई समझो।

खंजन सिखा बताय, इंद्र दृष्ट पड्‌ये वृद्ध मेह।
कुरज उडी कुरलाय, बद व मेघ आय जी।।

भोजराज सिंह, कोटड़ा, शिव

जब खंजन पक्षी दिखने लगे तो वर्षा समाप्त हुई जानो और यदि कुरज पक्षी शब्द करते एक स्थान से दूसरे स्थान को उड़ते फिरें तो वर्षा काल समाप्त हुआ जानों।

चिड़िया जे मालौ करै, कोठां कमरां मांय।
बिरखा आया आगमच, तो चार मास बरसाय।।

वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व यदि चिड़िया अपना घोंसला घर के कमरों में बनाने लगे तो जानो कि चौमासा के चारों महीने बरसात होगी।

बिरखा चट किकांट बिराजै। स्याह सफेद लाल रंग साजै।।
बिजनस पवन सूरियौ बाजै। तो घड़ी पलक माहे मेह गाजै।।

हनुमानराम जाट, लीकड़ी, शिव

गिरगिट पेड़ पर बैठकर काला, सफेद और लाल रंग बदले और वायु उत्तर पश्चिम से चले तो घड़ी भर में वर्षा आकर रहेगी।

आराम सूझी, सांढनी घोड़े अपार।
पग पटकैं बैठक नहीं, जद मेह आवण हार।।

पन्नाराम मेघवाल, रामपुरा, शिव

जन विश्वास है कि ऊँटनी इधर–उधर

दौड़ती फिरे, पैर पटके लेकिन बैठे नहीं तो वर्षा अवश्य होगी।

कुम्भ करेवा कौचरी मल्लारी और हिरणा।
इतरा लेवे दायंणा बांवा और घंणा।।

रामाकिशन चौधरी, महाचंदपुरा

किसी भी कार्य को करने के लिए जाते समय पणिहारी पानी से भरा घड़ा लेकर मिले, सर्प, उल्लू, सारस का जोड़ा, हिरण मिले तो इनको दाहिने हाथ की तरफ लेना चाहिए तो कार्य में सफलता मिलेगी। बांये हाथ की ओर लेने के लिए बहुत सारे सगुन होते हैं।

## माह की सूची

विक्रम सम्वत् 2066,सन् 2009

| | | | |
|---|---|---|---|
| चैत्र | (मार्च) | आश्विन | (सितम्बर) |
| वैसाख | (अप्रैल) | कार्तिक | (अक्टूबर) |
| ज्येष्ठ | (मई) | मार्गशीर्ष | (नवम्बर) |
| आषाढ़ | (जून) | पौष | (दिसम्बर) |
| श्रावण | (जुलाई) | माघ | (जनवरी) |
| भाद्रपद | (अगस्त) | फाल्गुन | (फरवरी) |

# कीट पतंगों का प्रभाव

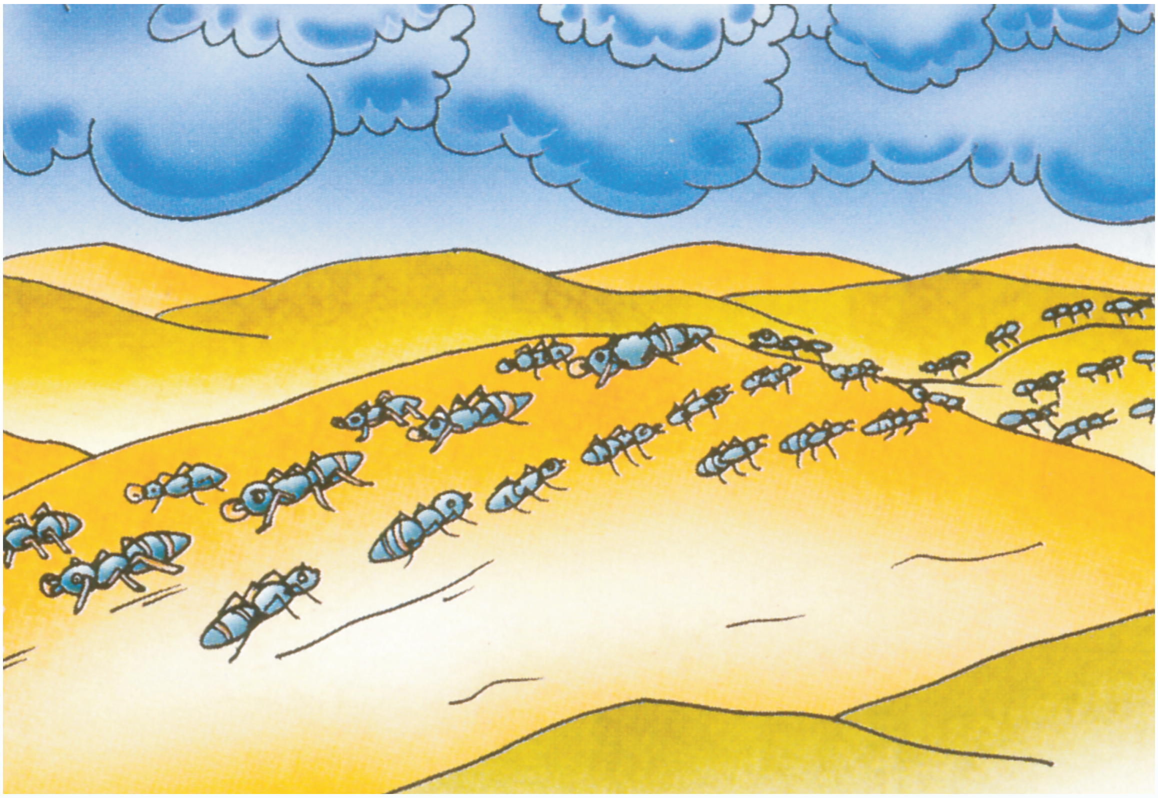

यदि चीटियॉं अपने अण्डों को सुरक्षित जगह ले जाना आरम्भ करती हैं तो अनुमान है कि 2– 4 घण्टे में वर्षा आने की सम्भावना है।

कल्याणमल किसान, बापूगांव

आषाढ़ के महीने से पहले काली चींटी अपने घोंसलों को जितनी ऊॅंचाई पर बनाती है ज्वार की फसल में उतनी ही बढ़ोतरी होती है।

पाटा गोयली ज्येष्ठ माह में अगर बोलती है तो वर्षा होने की सम्भावना रहती है।

यदि मकान की दीवार पर काला सर्प कटड़–कटड़ बोलता है तो वर्षा अवश्य आती है।

कन्हैयालाल गुर्जर, हरभांवता, निवाई

यदि धामण सांप लड़ते हैं तो अच्छी वर्षा आने का संकेत है। यदि धामण एवं काला सर्प आपस में लड़ते हैं तो एक ही फसल होती है अर्थात् अच्छी वर्षा का संकेत नहीं है।

चिंगणी चींटी गरया दे जाय निश्चित रूप से वर्षात आय।

बालू चींटी अपने खाने का सामान अन्यत्र ऊंची/ सुरक्षित जगह पर ले जाती है तो वर्षा आने की संभावना बनती है।

वर्षा के समय एवं विभिन्न रूपों के आधार पर अनेक क्षेत्रीय/ स्थानीय शब्द प्रचलन में आते हैं। चौमासा (चातुर्मास) की प्रथम वर्षा

के साथ ही भूमि पर मेंढक (मण्डूक) टरटराने लगते हैं। अतः उस वर्षा को डेडका बोल कहते हैं। माघ व पौष माह में होने वाली वर्षा मावठो या कोड़ कहलाती है।

पेड़ पर काला सर्प चढ़ जाता है तो असगुन/ अकाल का संकेत माना जाता है और यदि धामण सांप ऊपर चढ़ जाता है तो अच्छी पैदावार होती है।

मकड़ी द्वारा जाला पूरने पर वर्षा की सम्भावना कम हो जाती है।

सॉपों का बिलों से बाहर आकर पेड़ों पर चढ़ना हो तो वर्षा अच्छी होगी।

सॉप, गोयरा, डेडरा, कीड़ी–मकोड़ी जाय।
दर छोड़े बाहर भमें, नहीं मेहण की हाण।।

सॉप, गोयरा, मेंढक, चींटी, मकोड़ी अपने–अपने स्थान को छोड़कर इधर–उधर फिरने लगे तो समझो वर्षा आने वाली है।

गिरगिट रंग बिरंग हौ, मक्खी चटकै देह।
मांकड़िया चह चह करैं, जद आतां जो मेह।।

वीरसिंह, जसेका गॉव, शिव

गिरगिट बार–बार रंग बदले, मक्खी मनुष्यों के शरीर पर चिपक जाए तथा मकड़ी लगातार शब्द करने लगे तो वर्षा अधिक होगी।

कीड़ी मुं अंड लै, दर तज भूमि भमंत।
बरखा ऋतु विसेस या जल, थल टेल भरंत।।

घरों में कई बार चींटियों का ढेर इकट्ठा हो जाता है, और वे अपने मुँह में अंडे दबाए इधर–उधर दौड़ती रहती है। इसे वर्षा आने का सूचक माना जाता है।

अति काली भूमक्कड़ी, बांबी देख सुठंक।
बरस भलो बरसा घणी, हुवे किरात निसंक।।

जिस वर्ष काले रंग की मकड़ियां अधिक दिखाई पड़ें, उस वर्ष वर्षा अच्छी होगी तथा जमाना अच्छा होगा।

मक्खी मच्छर डांस हौ, भाग जमानो जांण।
उपजे जहरी जानवर, काल तणा सहिनांण।।

लोगों का विश्वास है कि यदि मक्खी, मच्छर और डांस अधिक उत्पन्न हों तो अच्छा जमाना होगा और यदि विषैले जंतु अधिक पैदा हों तो अकाल पड़ेगा।

## बादलों का प्रभाव

शुक्रवार की बादली, रही शनिश्चर छाय।
छाछ कहे सुन छाछसी, नित बरसो नहीं जाय।।

बाबूलाल बैरवा, जयसिंहपुरा

इसका अर्थ है शुक्रवार के बादल यदि शनिवार तक बने रहें तो वे बादल बरसे बिना नहीं रहेंगे।

होलिका दहन के पड़वा (प्रथम दिन) के दिन अगर सुबह बादल हो जाते हैं तो आषाढ़ माह में वर्षा होने की अधिक सम्भावना बनती है। अगर दोपहर बाद बादल होते हैं तो आषाढ़ सुदी में वर्षा होगी इसी तरह श्रावण, भाद्रपद को आसोज (आश्विन माह) मानते हैं।

ऊभ जीतरे आसरो मौगां जीतरे मेह।

अर्जुन राम भील, आदर्श बस्ती

जब सुबह के समय बादल चलते–फिरते दिखें व आसमान में रंग–बिरंगी धनुष के आकार की छड़ी दिखाई दे तो वर्षा होने की सम्भावना रहती है।

यदि लगते आषाढ़ निरतय कोण (पूर्व–उत्तर की दिशा) की ओर से वर्षा की घटा लग गई तो उसी रोज अच्छी वर्षा होगी।

कूमादेवी बैरवा, देवपुरा

बदली बादल में गमसै, सुण भड्डली पानी बरसै।
बादल ऊपर बादल धावै, सुण भड्डली जल आतुर आवै।।
इसका अभिप्राय है कि वर्षा आने से पूर्व धुंए की तरह उफनते हुए बादलों का आना, हर्ष का संदेश माना जाता है। शिखर या पर्वत यदि एक–दूसरे पर चढ़ते दिखाई दें तो अवश्य वर्षा होती है।

यदि होली के दूसरे दिन पड़वा, दौज, तीज व चौथ को बादल होते हैं तो वर्षा उसी माह में अधिक होती है।

बादल रॉता तो मेऊॅ आता।
सायं के समय में अगर बादलों का रंग लाल हो जाता है तो वर्षा आने की सम्भावना हो जाती है अर्थात् यदि आकाश सूर्य की लाल किरणों से रंजित हो गया है तो अब वर्षा निश्चित रूप से होगी।

बादल पीला तो मेऊॅ सील्या।
यदि सायं के समय बादलों का रंग पीला हो जाता है तो वर्षा के आसार कम हो जाते हैं।

आथण मोख सुवार सन्ज्या, ब्राह्मण ने मेऊं के लिए क्यों पूंछ्या।
सूर्यास्त के समय अगर मोख बादल में बनता है और सूर्योदय के समय अगर पर्वत पर बादल एकत्रित होते हैं तो बरसात आने में देरी नहीं होती है। यह किसानों का मानना है।

आथण मोख संवारे सूजा, मेह वर्षेगा बिना ब्राह्मण बूझा।
सुबह के समय सूर्य की किरणें लाल रंग की हों और सायं सूर्य की किरणें लाल रंग की विपरीत दिशा में हों तो वर्षा अवश्य होगी।

प्रभाती देवी, सूरज का खेड़ा, निवाई

शुक्रवारी बादली रही शनिवार छांय, कहे बढ़ी डोकरी बिन बरसों न जाय।
सायं को शुक्रवार से शनिवार शाम तक बादल रहते हैं तो बिना वर्षा किए नहीं जाते हैं। ऐसा जनविश्वास है कि शाम को आयी वर्षा और शाम को आया मेहमान वापिस नहीं जाता है।

तीतर पंखी बादली विधवा काजल रेख, वा बरसे या घर करें ई में मीन न मेख।

तेजमाल सिंह, जसे का गांव,

श्री मखन खां, मतुजाबस्ती

जो बादल तीतर के पंखों के समान होते हैं बरसे बगैर नहीं रहते है। जन विश्वास है कि तीतर पंखी बादल अवश्य मेह बरसाते हैं।

दिनूंग्यॉ री छींतरी, संझ्या रा गडमेल।
रात्यूं तारा निरमला, औ काला रा खेल।।

प्रातःकाल छितराये बादल आकाश में छाये हों और संध्या समय गड़मेल (घटाओं का सम्मिलित होना) हो तथा रात में निर्मल तारे छिटक जावें तो इसे अकाल का प्रतीक माना जाता है।

उगते रो माघ को आथो तेरी भोग।
कहे डंक सुण भड़ली नदिये चढ़े गोग।।

भोजराज सिंह, जसेका गांव, दीपाराम,

आदर्श बस्ती, हरीसिंह, जालेला, शिव

इसका अर्थ है डंक नाम का एक ब्राह्मण ज्योतिषी था जिसने भड़ली नाम की भीलणी अर्थात भील जाति की महिला जो कि ज्योतिष विज्ञान में निपुण नहीं थी उसे वर्षा होने के बारे में वर्षा होने से पहले (ब्राह्मण ने) लक्षण बताये थे कि सूर्य उदय के समय आसमान में बादलों का उलट–पलटकर चलना तथा अस्त होने के समय रंगीन धनुष दिखे तो नदियॉ बहेंगी अर्थात वर्षा अच्छी होगी।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, उगता दीखन बॉध।
जल्दी बरखा बरस सी ग्यारस देव उठान।।

नारायण खेड़ा, मालपुरा

अर्थात् श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्यनारायण बादल में नहीं दिखने पर देवउठनी ग्यारस से पहले वर्षा की सम्भावना होती है।

उगतऊ रो माछलो आथोते री भोग,
कहे भीलण मडली नींद पे चढ़ से गोग।

नखताराम, बिरधर सिंह की ढाणी

इसका अभिप्राय है कि सूर्य उदय होते समय बादलों का घेरा होना तथा अस्त होते समय आसमान में छितराये हुए बादलों का भराव होना तो मडली नाम की महिला ने कहा था कि वर्षा अच्छी होगी, नदियों में उफान आयेगा।

# आकाश, चन्द्र व सूर्य का प्रभाव

आसमान राता, मैं आता, आमर पीला और मैं सीला।

लादूराम जाट, श्रीरामजीपुरा, फागी

चन्द्रमा जब रात्रि को दिखता है तो उसके चारों तरफ एक कुण्डा (चक्र) होता है और जब आकाश पीला होता है तथा सूर्य में तेजी कम होती है तो वर्षा की संभावना होती है।

चांद डोले कुण्डो कहिये आ आंधी रो निशान।

मानाराम, रामपुरा

जब पानी के कुंड में चांद की परछाई डोलती है तो ये आंधी आने का सूचक है।

जिस वर्ष पुच्छल तारा दिखाई देता है और उसमें प्रकाश के रूप में पूँछ दिखाई देती है तो माना जाता है कि उस वर्ष पशु व मानव दोनों में महामारी आने की पूरी सम्भावना रहती है। यह महामारी उस तारे में पूँछ के प्रकाश की तीव्रता पर निर्भर करती है।

सहरिया जनजाति, शाहबाद

चौथा चमका बीजला पॉचा गाजे गाज।
सातू तूड़ नपजै बरखा बरसे जोर से उगन्ता परभात।।

आषाढ़ के महीने में चौथ तिथि को प्रातःकाल बिजली चमके और पंचमी को बादल गरजे तो सभी फसलें बहुत अच्छी होंगी।

उत्तर एवं पूर्व दिशा के बीच में बिजली चमकती है तो यह शुभ सगुन है अर्थात् वर्षा होगी। इसे अच्छी पैदावार होने का संकेत माना जाता है।

ईशान कोण (पूर्व से उत्तर के बीच में) में अगर गर्जन होती है व बिजली चमकती है तो 2–3 घण्टे बाद वर्षा की सम्भावना रहती है।

गरजता वो बरसता नहीं

गरजने से वर्षा कम आती है एवं बिन मौसम यदि बादल गरजता है तो वह बरसता नहीं है।

चॉद के कूड़ों व दूसरे दिन बाज़े उड़ो (तूफान)

अगर चन्द्रमा के चारों तरफ गोलाकार चक्र होवे तो दूसरे दिन भर आंधी तूफान चलते हैं। अगर उस गोलाकार में तारा (झरेली) होवे तो वर्षा 2-4 दिन में आने की सम्भावना रहती है।

बलोवणी घी गले देख तरसे नार।
सफेद पर कालो फरता ही दुनिया पूरये आस।।

जब स्त्री छाछ बिलौने लगती है तथा गर्म की जगह गर्म एवं ठंडा की जगह ठण्डा जल देती है फिर भी वो घी पिघलकर रह जाता है और सूर्य तापमान अर्थात् गर्मी से ही वर्षा का योग बन जाता है।

दुर्जन की किरपा बुरी सज्जन री भली त्रास।
जब सूरज तप तपे तब वर्षण री आस।।

रामाकिशन चौधरी, महाचंदपुरा

अर्थात दुर्जन व्यक्ति की कृपा बुरी होती है क्योंकि वह गलत रास्ता चलने की सलाह देता है। सज्जन पुरूष की संगति से सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा मिलती है। जब–जब सूर्य अधिक गर्मी देता है तब अधिक वर्षा होने की संभावना बनती है।

# माह का प्रभाव

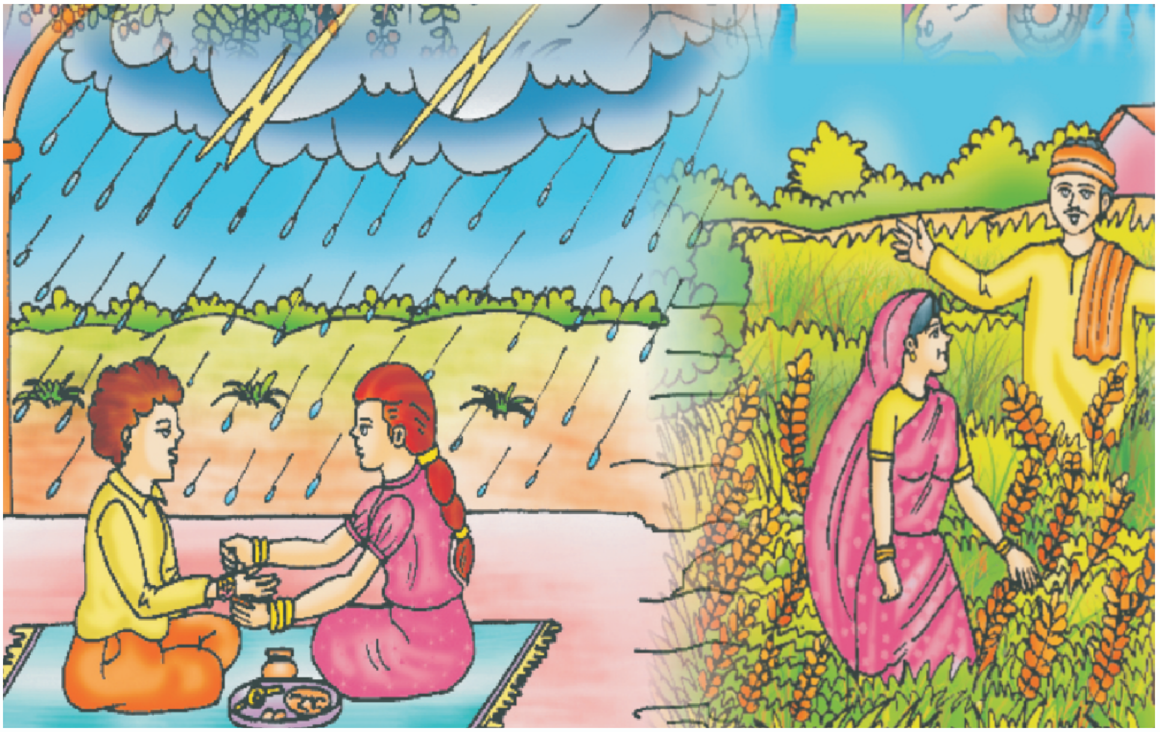

दो सावण दो भादवां दो कार्तिक दो माघ। गहणों गांठ्यो बेच द्यो नाज बसाओ सा।।

रामाकिशन चौधरी– महाचंदपुरा,
लक्ष्मीनारायण– करणपुरा

इसका अर्थ है महिला अपने पति से कह रही है कि दो श्रावण, दो भाद्रपद, दो कार्तिक, दो माघ माह के वर्ष में अधिक मास होते हैं तो अकाल पड़ता है। इसलिये गहना, जेवर बेचकर खाने के लिए अनाज खरीद लो।

श्रावण पहली पंचमी, गाज्यो मॉझल रात थे जाओ पिया मालवै, में जावां गुजरात।

पूरण सैनी, गुन्सी

श्रावण माह के प्रथम सप्ताह की पंचमी को आधी रात्रि को अगर बादल गर्जते हैं तो अकाल की संभावना बनती है।

राखी आगी खाक उड़ागी।

इसका अर्थ है रक्षाबंधन पर यदि वर्षा नहीं होती है तो आगे वर्षा की सम्भावना नहीं रहती है।

यदि किसी व्यक्ति की निरोगी काया है और यदि आषाढ़ माह में खुजली होवे तो वर्षा होने की सम्भावना है।

कन्हैयालाल गुर्जर, हरभॉवता

आखातीज के त्यौहार पर पानी से भरे मिट्टी के कलश में प्राकृतिक रंग के चार चने के दाने डाल देते हैं। चारों के रंग को क्रमशः चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ व आषाढ़ के रूप में मान लिया जाता है लगभग 4–4 दिन में देखा जाता है कि जो चना सबसे अच्छा फूलता है तो माना जाता है कि उस माह में वर्षा सबसे अच्छी होगी व फसलों की बढ़वार भी उसी

माह सबसे अच्छी होगी।

किराड़ जाति, शाहबाद

चैत्र व बैसाख माह में शाम का तारा (सायं 6 से 8 बजे तक) जितना अधिक देर तक दिखाई देगा तो माना जाता है कि वर्ष के चारों माह में खूब वर्षा होगी। यदि कम दिखाई देता है तो वर्षा कम होने की सम्भावना है।

सहरिया जनजाति, शाहबाद

होली दहन के दूसरे दिन यदि पणियारी पानी भरने के समय घड़े से पानी भरते समय मटकी भरने के बाद अगर बचे हुए पानी को मटकी पर डाले तो वर्षा अच्छी होगी, अगर जमीन पर फेंक दे तो वर्षा कम होने की सम्भावना बनती है।

भंवर लाल गुर्जर, प्रहलाद जाट करीरिया, निवाई

सावण भादवा पहले ग्वाल बाल हल जोती।
वो जमानो ऐसो आसी खाली न जावे खेती।।

अलूराम मेघवाल, केकड़ी

अर्थात् सावण–भादवे के पहले जब ग्वाल–बाल हल चलाने का खेल खेलते हैं तो अच्छी खेती का अनुमान लगाया जाता है।

हरण बडा या हरणा पौष सगुन बड़ा शाम।
अर्जुन गाड़ो हांकियो भली करे भगवान।।

तेजमाल सिंह, जसे का गॉव

ऐसा जनविश्वास है खेत में जब सगुन देखने जाते हैं तो सबसे पहले यदि हिरण सामने आ जाए तो अपसगुन माना जाता है। उस अनहोनी को टालने के लिए यह मंत्र बोला जाता है।

पूनी पड़वा गाले, बहत्तर दिन टाले।
पूर्णिमा व पड़वा को अगर दोनों दिन बारिश होती है और द्वितीया (दूज) को वर्षा नहीं होती है तो बहत्तर दिन तक वर्षा नहीं होती है।

पेली पड़वा गाजे, दिन बहत्तर बाजे।
आषाढ़ माह के प्रतिपदा को यदि बादल गरजें तो 72 दिन तक हवा चलती रहेगी और वर्षा नहीं होगी।

श्रावण शुक्ला सप्तमी जो गरजे अरध रात।
थे जावो पिया मालवा मैं जाऊं गुजरात।।

रामसहाय शर्मा, फागी

इसका अर्थ है कि श्रावण मास में शुक्ला सप्तमी तिथि को आधी रात्रि को आसमान में गरजन हो तो अकाल पड़ेगा।

श्रावण माह सूर्यामाला भादवा प्रवाही।
आसु माह उतरियो भलो मेहो घोर मचाई।

हरीराम, रावतरा

इसका अर्थ है कि श्रावण माह में उत्तर पूर्व की हवा चले और भादवा माह में पूर्व की ओर हवा चले तो बरसात अच्छी होगी।

होली के दूसरे दिन बादल निकलते हैं तो मानते हैं कि अच्छी वर्षा होगी व खुशहाली आएगी।

राधादेवी, मणकपुरा, निवाई

पानी बरसे आधा पूस। आधा गेहूं, आधा भूस।।
ऐसा जनविश्वास है कि पौष माह में यदि वर्षा आधे समय ही होती है तो आधी उपज ही मिलने की संभावना होती है।

# अन्य

डूँगर बैठी आभा, मत जा हॉनो नॉबॉ।

रामगोपाल सैनी, गुन्सी

अगर पहाड़ों पर बादल एकत्रित हो जाते हैं तो तुरन्त वर्षा आने की संभावना बनती है।

यदि वर्षा कम होती है तो उसके अगले वर्ष शीतलहर का प्रकोप ज्यादा मार करता है।

किराड़ जाति, शाहबाद

अगर किसान खेत में हल जोतने जाता है तो वर्षा आने से पूर्व ही उसे इसका आभास हो जाता है। किसान की दोनों जंघाओं के बीच कटाव शुरू हो जाता है। दो दिन पहले ही उसे पता लग जाता है। अगर वर्षा का जोर होता है तो पैरों में कीलें होती हैं वह जलने लगती हैं।

पॉचे पग पसारिया, छगे दीनो छेः साते सत छोड़ियो।
आठे पड़ियो काल, नवे में नर जागया, दसवें जय–जयकार।।

दीपाराम भील, आदर्श बस्ती

विक्रम संवत् 2005, 2006, 2007 व 2008 में लगातार चार साल भयंकर अकाल पड़ा था जिसको लेकर पूर्वजों ने यह कहावतें कहीं कि 2005 में अकाल ने अपने पैर पसारे (जमाए) तथा 2006 में भारी संख्या में पशु मरे, 2007 में लोगों ने हिम्मत छोड़ दी, हार गये व 2008 में लोगों ने पलायन किया तथा 2009 में वापिस अच्छी वर्षा हुई तथा 2010 में अच्छी धान की फसल पैदावार हुई तथा लोग वापिस घर गॉवों में आये व जय–जयकार के साथ पुनः जीवन बसर कर अपने वतन में रहने लगे।

सर्दी के मौसम में यदि कोहरा अधिक रहता है तो ऐसी स्थिति में वर्षा ऋतु में वर्षा अधिक आवेगी।

श्योजी रामजी, चाकसू

किसी भी व्यक्ति को सपने में पानी दिखाई देता है तो आग लगने का डर अधिक होता है।

धूहर मेघ का पड़े तुसार, सुण माघजी इसका सार।
पक्ष ग्यारहवें वर्षा होय, निश्चय पॉज बॉध कर सोय।।
अर्थात ओस के बरसते कणों से छा जाने वाले अन्धकार को धूर कहा जाता है। धूर छाने पर ग्यारहवें पक्ष में वर्षा होती है।

सुबह के समय पर ओस एवं सर्दी का बढ़ना संकेत देता है कि वर्षा की सम्भावना नहीं बनती है अथवा नहीं रहती है।

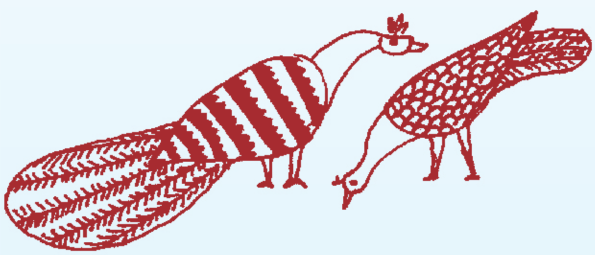

# सारांश

राजस्थान राज्य की भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक विविधताओं को सामने रखते हुए राज्य में आपदा पूर्व तैयारी परियोजना को हाथ में लिया गया है। इस परियोजना का लक्ष्य आपदा राहत व पुनर्वास जैसी चुनौतियों का सामना करने हेतु समुदाय को आपदा पूर्व तैयारी के लिये प्रेरित करते हुए लोगों में जागरूकता लाना, उनका क्षमतावर्धन करना तथा गॉव एवं ब्लॉक स्तर पर आपदा पूर्व कार्य योजना निर्माण एवं इसके क्रियान्वयन हेतु उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना है। इस तैयारी और प्रयास में विभिन्न सम्बन्धित सरकारी विभागों तथा एजेन्सियों के साथ समन्वय करना और उनका अनिवार्य रूप से सहयोग लेना शामिल है। इसी दौरान समुदायों में प्रचलित आपदा पूर्व पारम्परिक पूर्व चेतावनी तरीकों व पद्धतियों को संकलित करने का प्रयास किया गया। यह सभी पारम्परिक पूर्व चेतावनी तरीके प्रकृति से जुड़े होने के आधार पर इनको कई भागों में वर्गीकृत करने का प्रयास रहा। ये कहावतें व तरीके क्षेत्र विशेष पर आधारित हैं जो कि वहाँ की प्रकृति में होने वाली घटनाओं, सामाजिक व्यवस्थाओं व प्रकृति में पाये जाने वाले जीव जन्तुओं, पेड़–पौधों तथा हवा व बादल इत्यादि के प्रभावों के अनुभव के आधार पर उस क्षेत्र में उपयोग में लाई जाती रही हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी इनका उपयोग समुदाय के स्तर पर देखा गया है साथ ही साथ सरकार व वैज्ञानिकों ने भी इन तरीकों को बढ़ावा देने के लिए अलग–अलग प्रयास किये हैं।

राजस्थान राज्य की ग्रामीण जनता मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद समुदाय के स्तर पर पारम्परिक आपदा प्रबन्धन के तरीके अपनाती रही है जो कि पूरे समाज के विश्वास, सहयोग व सहभागिता के द्वारा आत्मनिर्भरता से परिपूर्ण हैं। ग्रामीण जनता सरकार व बाहरी मदद की हमेशा मोहताज नहीं रही है। परन्तु विगत वर्षों में सरकार द्वारा समुदायों को उपलब्ध कराये गये राहत व पुर्नवास कार्यों के कारण लोग स्थानीय ज्ञान का प्रयोग कम करने लगे हैं और साथ ही साथ इसे भूलने भी लगे हैं। बदलते परिवेश में स्थानीय प्रयास, पारम्परिक तरीके व सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए इस ओर ध्यान दिया गया है जो कि समुदायों को आत्मनिर्भर बनाने व जनहानि को कम करने में अग्रणी भूमिका अदा करेगा अर्थात इसे हर स्तर पर स्थानीय लोगों को आपदा पूर्व तैयारी व प्रबन्धन के दीर्घकालीन उपाय या समाधान के रूप में देखा जा सकेगा। विकास की रफ्तार बरकरार रखने में लोगों की सहभागिता, अपने पारम्परिक अनुभव आधारित तरीके व ज्ञान, स्व–निर्मित आपदा प्रबंधन योजना तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का समुचित प्रयोग करते हुए सरकार पर निर्भरता कम होना इसका परिचायक माना जा सकता है।

ये कहावतें एवं लोकोक्तियॉ क्षेत्रीय आधार पर भिन्नतायें लिए हैं तथा राज्य के दूसरे हिस्सों व भारत के अन्य क्षेत्रों से काफी कुछ मिलती–जुलती हैं जो कि स्थानीय विशेष परिस्थितियों में समुदाय विशेष से जुड़ी पायी गयी हैं। प्रकृति से छेड़छाड़ के चलते पारिस्थितिकी तंत्र का बिगड़ना राज्य में आपदाओं की गम्भीरता व बारम्बारता को बल प्रदान कर रहा है साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर मुद्दों के समाधान हेतु समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन हर स्तर पर रामबाण साबित हुआ है। इस परियोजना की सीख को अन्य दावेदारों (हितधारकों) व क्षेत्रों में बॉटने का प्रयास रहेगा जिससे कि विकास की रफ्तार को बनाये रखने में टास्क फोर्स सदस्य व पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधि क्षेत्र के विकास हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हुए महात्मा गांधी के ग्राम विकास के सपने को साकार कर पायेंगे।

# सिकोईडिकोन : परिचय

सिकोईडिकोन एक स्वैच्छिक संस्था है जिसकी स्थापना वर्ष 1981 में राजस्थान के जयपुर जिले में आई विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित लोगों को तात्कालिक राहत पहुँचाने के लिए की गई थी। तब से लेकर अभी तक, इसने विकास के विभिन्न आयामों में विशेषज्ञता अर्जित की है, जो निश्चित रूप से ग्रामीण विकास के लिए उसके 28 वर्षों के कठोर परिश्रम, समर्पण तथा कुशलता का परिणाम है। इस समयावधि के दौरान स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास की विभिन्न अवधारणाओं व रणनीतियों को आजमाया है। सिकोईडिकोन का जोर विभिन्न पद्धतियों व हस्तक्षेपों को समेटे हुए जन–आधारित सत्त विकास पर है और अपनी इसी स्पष्ट धारणा के साथ वह संस्थागत विकास, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, बाल विकास, स्वास्थ्य कार्यक्रमों सहित अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में सक्रिय है। सिकोईडिकोन विगत तीन दशकों से विकास के कार्यों में सहभागी समुदाय, नागर समाज और स्वैच्छिक संस्थाओं की क्षमता वृद्धि का कार्य निरंतर कर रहा है। स्वैच्छिक विकास कार्यों की प्रक्रिया में सिकोईडिकोन के कार्यों की सदैव सर्वत्र सराहना की जाती रही है जिसके चलते नेशनल फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली द्वारा उसे स्थानीय भागीदारी के प्रोत्साहन हेतु ''स्थानीय सहभागिता प्रोत्साहन सम्मान 2001'' प्रदान किया जा चुका है।

संस्था सीधे रूप से समाज के वंचित वर्ग–दलित, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, महिलाओं, बच्चों, भूमिहीन एवं छोटें सीमान्त किसानों, दस्तकारों एवं ऐसी जनजातियों जो आज भी मूल सुविधाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से वंचित है, के साथ कार्यरत है। साथ ही संस्था की पहुँच असीमान्त किसान एवं उस शहरी जनसंख्या तक भी है, जो कि कई चुनौतियों जैसे– जलवायु परिवर्तन, जैनेटिकली मॉडिफाईड ऑर्गेनिज्म आदि से जूझ रही है, तक भी है। संस्था विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं, मीडिया कर्मियों व राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न स्टेकहोल्डरों के साथ सम्बन्ध एवं साझेदारी निर्माण में भी संलग्न है। सिकोईडिकोन मुख्य रूप से राजस्थान में कार्यरत है परन्तु कुछ पहल मध्यप्रदेश एवं दिल्ली में भी की गयी है। सिकोईडिकोन वर्तमान में तीन मुख्य थीमों मूल अधिकार, आर्थिक न्याय, आजीविका सुरक्षा एवं संस्थागत विकास के क्षेत्रों में कार्यरत है।

cecoedecon

**सेन्टर फॉर कम्युनिटी इकोनोमिक्स एण्ड डेवलपमेन्ट कन्सलटेंट्स सोसायटी (सिकोईडिकोन)**

**एफ–159–160, सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर–302022,**

**टेलिफोन : 91–141–2771488/2771855/3294834–36**

**फैक्स : 91–141–2770330/2771488**

E-mail : sharad_jp1@sancharnet.in/cecoedecon@gmail.com

• Visit us at : www.cecoedecon.org